International Journal of Political Science and Governance 2019; 1(1): 01-03

E-ISSN: 2664-603X
P-ISSN: 2664-6021
IJPSG 2019; 1(1): 01-03
Received: 01-02-2019
Accepted: 03-03-2019

डॉ. राजेश कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान विभाग, एस0 एस0 एस0 वी0 एस0 राजकीय स्नातकोत्तर महा0 चुनार, उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondence
डॉ. राजेश कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान विभाग, एस0 एस0 एस0 वी0 एस0 राजकीय स्नातकोत्तर महा0 चुनार, उत्तर प्रदेश, भारत

भारत की राष्ट्रीय हित सम्बन्धी अवधारणा

डॉ. राजेश कुमार

प्रस्तावना
यह एक संकल्पना है। देश एवम् विदेश (Demestic & Foreign) दोनों नीतियाँ इसके लिए गामी हैं। हम एन0आई0 बनाते हैं जिससे सफलता पायी जाये।

''ये कुछ लक्ष्यों को पाने के लिए विदेश नीति के माध्मय से प्रयास करती हैं।''

यह एक लक्ष्य एवं विदेश नीति हथियार है। कूटनीति भी एक टूल है। राष्ट्रहित के बहुत सारे तत्व निर्धारित करता है। यह आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, भू–सामरिक एवं विभिन्न हित है। एशियान में मनमोहन सिंह ने East Asia Policy में सहयोग (Co-operation) की बात की है। हम यह प्रयास कर रहे हैं कि UND के सुरक्षा परिषद के सदस्य बनकर विश्व में मजबूत हो जाये। आदिकाल में भी राजाओं का हित होता था कि अपने क्षेत्र को बचाकर रखा जाये एवं बढ़ाया जाये वह कम न हो पाये। विश्व–विजेता, सम्राट एवं विभिन्न लोगों का हित रहता था। मध्यकाल में चर्च एवं राजा में संघर्ष चला था। राष्ट्र राज्य ही राष्ट्रीय हित की बात करता है। ब्रिटिश, अमरीका, फ्रेंच, स्पेनिश, पूर्तगाली इसमें क्रमशः राष्ट्र राज्य थे। आज भारत इन्हीं लोगों का अनुसरण कर रहा है। आज भारत राष्ट्र राज्य बनने का प्रयास कर रहा है। किसी राज्य पर हम अपना हित नहीं थोप सकते प्रयास करते हैं कि State भी Nation से जुड़े USSR में राज्य (State) कमजोर पड़ा था। युगोस्लाविया में भी नृजातीयता (Ethnicity) आयी एवं बँटवारा हुआ। अमरीका, फ्रांस, कनाडा भी State मजबूत से Nation मजबूत रहा एवं राष्ट्र राज्य बने रहे। 1945 में पूरा State System उभर कर आया। इसके बाद अन्तर्राष्ट्रीय (Internation Politics) आयी जिसमें व्यक्ति सिर्फ अपने राष्ट्र ही नहीं वरन् दूसरे देशों को भी देखना पड़ा तब राष्ट्रीय हित की बात महत्वपूर्ण हो गयी। लोकतांत्रिक देशों में राष्ट्रहित जनता से जुड़ा है। सैनिक एवं बहुलवादी शासन में सिर्फ पार्टी ही हित निर्धारित करती है, राष्ट्रीय हित उतना महत्वपूर्ण नहीं होता है। कभी–कभी लोकतांत्रिक सरकारें भी हमला करती हैं। पाकिस्तान की रिपोर्ट में कहा गया कि वे भारत से कभी जीत नहीं सकते फिर भी राष्ट्रीय हित को अलग रखकर पाकिस्तान भारत पर हमला करता है।

जार्ज डब्ल्यू बुश जानते थे कि इराक में अमरीका को नुकसान है फिर भी अमरीका ज्यादा सुरक्षित हुआ है। कुछ लोग मानते हैं कि आतंकवाद को नया प्रारूप दे रहा है जो विश्व सुरक्षा को खतरा बन सकता है, अमरीका जड़ में चोट मारने की बात करता है। आतंकवाद से सबसे ज्यादा भारत परेशान रहा है। परन्तु अमरीका भारत को भी कमजोर करता रहा है। जम्मू एवं कश्मीर समस्या पर सभी देश मुद्दा बनाये रखे हैं। आतंकवाद में पार्टनरशिप की बात भारत–अमरीका के साथ है। परन्तु अफगान संकट में अमरीका ने पाक को 3.5 बिलियन डॉलर की सहायता दी जो बाद में भारत के खिलाफ इस्तेमाल किया था जो पहले रूस के खिलाफ इस्तेमाल करना था। भारत चाहता है कि ईराक में कम्पनियाँ ज्यादा फायदा कमाये। राष्ट्रीय हित में भावनायें भी आ रही हैं। भारत सुरक्षा–परिषद में वीटो के साथ प्रवेश चाहता है, जो कि थोड़ा ही सही है। किसी भी राष्ट्र को लोकतंत्र करने में काफी समस्याएं आती हैं।

राष्ट्रीय हित में राष्ट्र सोच–विचारकर कार्य करते हैं। हर देश हित के आधार पर प्रभुसत्ता चाहता है। अमरीका चाहता है कि विश्व भर प्रभुसत्ता रहे। भारत में छोटे राष्ट्रों पर प्रभुत्व करता है। 1962 में चीन ने हित के लिए ही विश्व को युद्ध करके दिखाया। अमरीका वियतनाम, गल्फ युद्ध, अफगान सोवियत संघ से टक्कर एवं कल उत्तर–कोरिया हो सकता है एवं Brain Wash करके सुधार करते हैं।

राष्ट्रीय हित के प्रकार
1. Subject- Political, Strategic, Geo-Stratic Militans, Economic, Social, etc.
2. Priority- ये सभी देशों की अलग–अलग होती है।

(1) Subject: राजनीतिक (Poltical)- इसमें भारत ने अमरीका से सम्बन्ध सुधारे हैं। राजनीति पर्यावरण दक्षिण एशिया में बना रहे हैं।

सैनिक: इस रूप से भारत सोवियत संघ पर निर्भर था वह प्रयास कर रहा है कि यह निर्भरता समाप्त किया जाये। विभिन्न देशों से हथियार लेना ठीक रहेगा। आज अमरीका, इजराइल, जर्मनी, फ्रास, यू0के0 सबसे हथियार ले रहे हैं। आज आधुनिक हथियार हम अमरीका एवं इजराइल से ले रहे हैं।

भू–सामरिक (Geo-Strategic): इसमें हम चीन, बांग्लादेश, भूटान एवं नेपाल को खुश रखने का प्रयास कर रहे हैं।

सन् 1990–1992: इस समय से हम एल.पी.जी. बनाकर आर्थिक हित बना रहे है। विकसित देशों से सम्बन्ध बना रहे।

सांस्कृतिक: इसमें हम पाक के साथ People-to-People सम्पर्क बना रहे। प्रयास कर रहे हैं कि बातचीत से सम्बन्ध सुधार सके। चीन से भी सम्बन्ध बना रहे हैं।

(2) Priority: Core, Marginal, Primary, Secondary, Permanent, Specific.

Core Interest: इसमें हम कभी भी समझौता नहीं करते। क्षेत्रीय एवं राजनीतिक मुद्दों पर हम कभी समझौता नहीं करते।

Marginal: इसमें हम आर्थिक, सामाजिक न्याय में समझौता करते हैं।

Primary: में अधिक महत्वपूर्ण होता है जबकि Secondary में कम महत्वपूर्ण होता है। ये State ds fundamental नहीं होते हैं यद्यपि वह महत्वपूर्ण भी है।

Permanent: हम इसमें कभी भी राष्ट्र के खिलाफ बात को हमेशा दबाते हैं। यह टाइम के हिसाब से बदलते रहते हैं वे परिवर्तनीय होते हैं। अमरीका–भारत आज विश्व के विकास की बदलती माँग है। अमरीका का सहयोग Primary है क्योंकि भारत 10 प्रतिशत जी0डी0पी0 विकास चाहता है। Policy Variable भी है क्योंकि पाक से भारत आज बात करता है।
इराक का मुद्दा स्पेसिफिक है क्योंकि सद्दाम के बाद अमरीकी हित खत्म हो गया। भारत आज इराक मुद्दे पर इराक की जनता एवं अमरीकी लोगों दोनों का विश्वास बना रहे। उत्तर कोरिया के मुद्दे पर अमरीका स्पेसिफिक था। भारत को इराक के खिलाफ मतदान भी स्पेसिफिक था क्योंकि इसमें तुरन्त निर्णय लेना होता है।

International Interest
- National Security
- Ideology
- Foreign Policy

इन चरों के साथ भी राष्ट्र हित को जोड़ा जाता है। विदेश नीति को राष्ट्र हित निर्देशित करता है। विदेश नीति इसको प्राप्त करने का साधन है। एक वाद है कि कभी–कभी विदेश नीति तय करेगी कि हित क्या होंगे। दोनों में काफी कुछ मिलता है। मान्यता है कि राष्ट्रीय हित तय करते हैं कि Foreign Policy क्या हो। कई जगह पहले Foreign Policy तय हो जाती है तब राष्ट्रीय हित देखा जाता है। भारत शन्ति चाहता है अतः राष्ट्रीय हित भी इसी के इर्द–गिर्द घूमेगी। परन्तु लुक ईस्ट नीति के तहत भारत अब एशिया की तरफ ज्यादा देख रहा है। क्योंकि पहले भारत अमरीकी शिंकजे से दूर था एशिया अमरीकी चंगुल में था। पाक की भी विदेश नीति निर्धारित है अतः वे राष्ट्र हित पर चल रहे हैं।
अमरीका ने Policy of Hegemony बना रखी है और वे कई जगह हस्तक्षेप करते हैं। विभिन्न एन0आई0 के आधार पर नीतियां बनाते हैं। एन0आई0 ही Foreign Policy को निर्देशित करता है। ज्यादातर विद्वान भी इससे सहमत थे। कुछ केसो में दोनों भी सही होती है। राष्ट्रीय हित अन्ततः दुरगामी परिदृश्य में विदेश नीति को निर्धारित करता है।

2. विचारधारा (Ideology): कुछ राष्ट्रों की विदेश नीति ही विचारधारा पर आधारित रही है। साम्यवादी विचारधारा के साथ भारत सम्बन्ध बनाये रखे है। वह पूँजीवादी देशों से भी सम्बन्ध बनाये रखे हैं। विचारधारा के इर्द–गिर्द ही राष्ट्र हित चलता है। सारी शीत युद्ध विचारधारा पर लड़ा गया जो हमारी विचारधारा से मेल खाता है वह ही राष्ट्रीय हित शत्रुओं को चुनौती देना ही विचारधारा है। विचारधारा में ही शान्ति, तनाव, साम्राज्यवाद आते है। इसके परिप्रेक्ष्य में ही विश्व देखा जाता है। सभी राष्ट्रों को डब्ल्यू0टी0ओ0 वादी विचाराधारा रखने की बात पश्चिमी राष्ट्र कर रहे हैं। विचारधारा के द्वारा हस्तक्षेप, आर्थिक सहायता सभी आते हैं।

3. राष्ट्रीय सुरक्षा (National Security): मार्गेन्थाऊ के यथार्थवाद पर आधारित है। यह शक्ति पर आधारित है। ये Territorial Integrity एवं Survival को राष्ट्रीय हित मानते हैं। आलोचक कहते हैं कि मार्गेन्थाऊ राष्ट्रीय हित को राष्ट्रीय सुरक्षा के बाद संकीर्ण विचार से जोड़ रहे हैं। सुरक्षा तो हित का सिर्फ एक ही हिस्सा है। यथार्थवादी सुरक्षा एवं जीविका को ही राष्ट्रीय हित मानते हैं जबकि आदर्शवादी Co-operation progress विभिन्न चीजों को राष्ट्रीय हित मानते है। वे Military के नहीं वरन् Social, Economic, Political बनाने की बात करते हैं। जबकि Military से Comfrontation होगा राष्ट्रीय हित को राष्ट्रीय सुरक्षा से जोड़ना ठीक नहीं है। यह तो सिर्फ एन0आई0 का एक भाग है।

4. अन्तर्राष्ट्रीय हित: इसमें Liberalism पहले आता है, यह विश्व में शान्ति एवं सहयोग में विश्वास करता है। क्या पंचशील सिर्फ भारत के विषय में ही है। शिमला में पाक एवं भारत दोनों को फायदा हो। हमारी मूल पॉलिसी से दिक्कत नहीं है। जब तक आदान–प्रदान न हो तब तक द्विपक्षीय सफल नहीं होता, परमाणु सौदे में अमरीकी हित भारतीय हित से भी जुड़ा है। भारत एवं चीन ने 5 आधार पर पंचशील बनाने यह विश्व हित में है। अमरीका युद्ध को नकारते नहीं है। अमरीका परमाणु युद्ध से भी नहीं डरता है। भारत ने युद्ध थोपने पर ही युद्ध की बात कही है। एन0आई0 का मतलब संकीर्ण विचारधारा नहीं है वरन् विश्व कल्याण है। Mutual benefit विश्व लाभ की बात करता है। वर्तमान में भारत अपने राष्ट्रीय हित में लगातार बढ़ोत्तरी कर रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची
1. डॉ0 अश्विनी कुमार सिंह : कश्मीर समस्या, 2012
2. सुषमा गर्ग : अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, 2014–15
3. डॉ0 दीनाथ शर्मा : अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, 2013
4. रामसूरत पाण्डेय : राष्ट्रीय सुरक्षा एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, 2014
5. डॉ0 बी0एल0 फाड़िया : अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, साहित्य भवन पब्लिकेशन, 2017

6. पुष्पेश पंत : अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, 2014
7. यू0आर0घई : अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, 2013
8. तेजस्कर पाण्डेय, सविता पाण्डेय : भारत में सामाजिक समस्याएँ, 2012